आज का दिन 1931 में थॉमस एडिसन ने पेटेंट के लिए आखिरी आवेदन दि

किसान व व्यवसायी मिलकर करें काम तो बढ़ेगी लीची की पहुंच

कृषि

मुजफ्फरपुर | कार्यालय संवाददाता

राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक विशालनाथ ने किसानों साथ मंगलवार को बैठक की। मौके पर लीची के विकास से लेकर पेड़-पौधों के रख-रखाव तक पर चर्चा हुई।

निदेशक ने कहा कि लीची के विकास के लिए किसानों के साथ व्यवसायियों की भूमिका भी अहम है। किसान लीची पैदा करते हैं। उसकी मार्केटिंग व्यवसायी करते हैं। अच्छी क्वालिटी की लीची को देश-विदेश में पहुंचाने का जिम्मा व्यवसायियों पर होता है। किसान व व्यवसायी मिलकर कर काम करें तो लीची की पहुंच बढ़ेगी। बैठक में 50 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। उद्यान रत्न भोला झा ने लीची के बेहतर उत्पादन के लिए शोध परिणामों के समावेश की भूमिका पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक लीची का आकार व बोरर समेत सभी कीटों के प्रकोप का समाधान खोजें। जिला सहकारिता संघ के अध्यक्ष वीरेंद्र राय ने कहा कि किसानों को पिछले साल हुई क्षति का मुआवजा मिलना चाहिए। राजकुमार केडिया ने कहा कि लीची में गूदे की मात्रा बढ़ाना आवश्यक है।

बैठक में चर्चा

- राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक ने किसानों के साथ की बैठक
- कीटों के प्रकोप से बचने पर जोर, शोध की भी जरूरत पर भी दिया बल

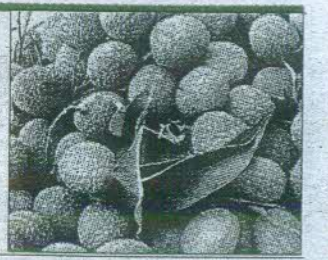

शंभूनाथ चौबे ने कहा कि प्राकृतिक आपदाओं से लीची उत्पादन पर असर पड़ रहा है। मुरलीधर शर्मा ने कहा कि लीची किसानों को फसल बीमा का लाभ मिलना चाहिए। बैठक में सुधीर कुमार पाण्डेय, भवानी शंकर साहू, मो. निजाम, दुर्गेश जयसवाल ने विचार व्यक्त किये। केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके पूर्वे लीची तोड़ाई के बाद फल प्रबंधन व मार्केटिंग, डॉ. कुलदीप श्रीवास्तव ने कीट प्रबंधन व डॉ. एसडी पाण्डेय ने कृषि कार्य के बारे में किसानों को बताया।

रिपोर्ट भेज दी जाये तो हो जाएगी क्षतिपूर्ति : जिले के लीची किसानों ने मंगलवार को मुशहरी कांग्रेस कार्यालय में बैठक की। बैठक में जिला सहकारिता संघ के अध्यक्ष ने कहा कि पिछले साल बोरर से 90 फसदी लीची बर्बाद हो गयी। इसकी रिपोर्ट जिला उद्यान अधिकारी राधेश्याम ने आपदा प्रबंधन के अपर समाहर्ता को सौंपी। इस पर सांसद अजय निषाद की पहल पर केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने क्षतिपूर्ति के लिए 792 करोड़ रुपये दिये। लेकिन लीची अनुसंधान केंद्र ने इसकी रिपोर्ट सरकार को नहीं भेजी। इस कारण किसानों को मुआवजा नहीं मिल सका। यदि लीची अनुसंधान केंद्र आज रिपोर्ट भेज दे तो लीची किसानों को फसल क्षति मिल जाएगी। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट के संबंध में लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक विशालनाथ से जानकारी मांगी गयी, लेकिन उन्होंने जवाब नहीं दिया। लीची अनुसंधान केंद्र व बिहार राज्य बागवानी विभाग की गड़बड़ी के कारण क्षति पैकेज का फायदा किसानों को नहीं मिला। बैठक की अध्यक्षता कृष्ण मुरारी सिंह, चंदेश्वर प्रसाद चौधरी, सुधीर पाण्डेय, शंभूनाथ चौबे, मुरलीधर शर्मा, उद्यान रत्न भोलानाथ झा, विनोद राय, जितेंद्र यादव, रामचंद्र प्रसाद सिंह, योगेंद्र सिंह, जितेंद्र सिंह, श्यामनंदन यादव आदि मौजूद थे।